7

भाषा विकास की प्रक्रिया एक मनोसामाजिक संदर्भ

सीमा*

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा विकास की प्रक्रिया में मनोसामाजिक संदर्भ की भूमिका को समझने का प्रयास किया है। प्रस्तुत समस्या का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने सरकारी विद्यालय के कक्षा 4 तथा कक्षा 5 के पाँच-पाँच विद्यार्थियों द्वारा पाँच संप्रेषणपरक भाषायी गतिविधियाँ संपन्न करवाईं। जिनका निर्धारित पैमानों के आधार पर विश्लेषणात्मक विवरण लेख में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

भाषा मनुष्य के जीवन में निरंतर प्रवाहमान है। भाषा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज से संपर्क स्थापित करता है। भाषा और समाज के बीच बड़ा ही गहरा संबंध है और दोनों ही मानव से संबंधित हैं। अतः मानव के सर्वांगीण विकास हेतु भाषा और समाज दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक बच्चे के संपूर्ण भाषायी विकास में कई तत्व मिलकर कार्य करते हैं। इस संदर्भ में भाषा मनोवैज्ञानिकों ने समय-समय पर विविध भाषा संबंधी सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं, जिसमें मुख्यत: तीन कोटियाँ विद्यमान हैं जो इस प्रकार हैं — संरचनात्मक, रचनांतरण एवं समाज संदर्भित तत्व।

संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिक सस्यूर तथा ब्लूमफ़ील्ड ने बच्चे की भाषा एवं अधिगम प्रक्रिया में भाषा के संरचनात्मक स्वरूप पर अधिक ज़ोर दिया। इनके अनुसार भाषा सीखने का मुख्य आधार भाषा के संरचनात्मक स्वरूप पर संपूर्ण अधिकार का होना है। सस्यूर ने भाषा के संपूर्ण रूप को समझने के लिए दो मुख्य संकल्पनाओं को प्रस्तुत किया, जिनमें से एक का नाम 'भाषा व्यवस्था' रखा, जिसे 'लौंग' कहा गया और दूसरा 'भाषा व्यवहार' था, जिसे 'पैरोल' कहा गया। भाषा व्यवस्था किसी समाज विशेष के सामूहिक अनुबंधन पर आधारित होती है, जिसकी वजह से यह समरूपी होती है। यह एक सामाजिक वस्तु है जो व्यक्ति की व्यक्तिगत सीमाओं से ऊपर उठकर सामाजिक प्रकार्यों व संकेतों पर आधारित होती है। जबकि भाषा व्यवहार अथवा पैरोल व्यक्तिगत संदर्भों से जुड़े होने के कारण भाषा का व्यक्तिगत रूप है। यहाँ व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत

* *शोधार्थी* (एम.फ़िल), शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आवश्यकताओं, परिस्थिति, संदर्भ और औचित्य के अनुसार भाषा का प्रयोग करता है। इसके साथ ही यह भी उतना ही सत्य है कि 'भाषा व्यवस्था' के अभाव में 'भाषा व्यवहार' नहीं किया जा सकता। अतः यह दोनों परस्पर सापेक्षिक अवधारणाएँ हैं जिनका विकास एक बच्चे में समानांतर रूप से ही किया जा सकता है। संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिक व्यवहारवादी दृष्टिकोण से प्रभावित थे। इन्होंने भाषा सीखने को एक आदत व अभ्यास के रूप में समझा और भाषा सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा व पुनर्बलन की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

तत्पश्चात मनुवादी चॉम्स्की ने वर्ष 1957 में उपर्युक्त अवधारणा के विरोध में रचनांतरण सिद्धांत या सार्वभौमिक व्याकरण की संकल्पना को सामने रखा, जो कि अनुभववाद पर आधारित न होकर बुद्धिवाद पर आधारित थी (सिंह, 2007)। इनके अनुसार भाषा अधिगम की प्रक्रिया एक आगमनात्मक पद्धति ना होकर, निगमनात्मक प्रक्रिया के तहत कार्य करती है। इन्होंने भाषा अधिगम में व्यक्ति की सहजात प्रवृत्तियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया (सिंह, 2011)। इन्हीं सहजात वृत्तियों से युक्त होने के कारण व्यक्ति का मन एक विशिष्ट स्कीम के अनुसार कार्य करता है, जिसकी वजह से वह अपने वातावरण में प्रयुक्त हो रहे, भाषा के विविध प्रयोगों में से भाषा के साधारणीकृत नियमों का निर्धारण कर लेता है। मानव मस्तिष्क पर अंकित इन्हीं भाषा संबंधित सहजात वृत्तियों की व्यवस्था को ही, चॉम्स्की ने सार्वभौमिक व्याकरण का नाम दिया है। इस अवधारणा के फलस्वरूप भाषा मूर्त न रहकर अमूर्त विषय के रूप में उभरी, जहाँ भाषा विशिष्ट व्याकरण, सर्वभाषा व्याकरण में परिवर्तित हो गई।

इस अवधारणा के प्रतिक्रियास्वरूप समाज भाषा वैज्ञानिकों जैसे—लेबाव (Lebov), हाय्म्स (Hymes) और फिशमेन (Fishmen) आदि ने भाषा को मूलतः समाज की वस्तु माना। इन्होंने बच्चे के भाषा विकास में उसके सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण की भूमिका को महत्वपूर्ण माना। इनका मानना है कि भाषा विचार को विकसित करने का माध्यम बनती है (व्योगोत्सकी, 2011)। बच्चे की भाषा, समाज के साथ संपर्क का परिणाम होती है जहाँ चॉम्स्की ने भाषा को समरूपी माना था, वहीं समाज भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा को मुख्यत: विषम रूपी माना क्योंकि इनके अनुसार भाषा व्यक्ति के सामाजिक संदर्भों द्वारा नियंत्रित होती है इसीलिए उसके अनेक भेद व उपभेद पाए जाते हैं। इन्होंने भाषा सीखने को एक उत्पादन के रूप में न देख कर, बल्कि एक प्रक्रिया के रूप में समझा। समाज भाषा वैज्ञानिक, भाषा और समाज के संबंधों पर बहुआयामी चिंतन करते हुए नज़र आते हैं, जिसके संदर्भगत वे, द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, कोड मिश्रण व भाषा परिवर्तन जैसी अनेक अवधारणाओं पर कार्य करते हैं। इस अवधारणा को ध्यान में रखते हुए भाषा अधिगम में संप्रेषणपरक व प्रयोजनमूलक भाषा सीखने पर बल दिया गया है।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि बच्चे के भाषा विकास में भाषाविदों ने कभी बच्चे की

'व्यक्तिगत क्षमता' पर अधिक बल दिया, तो कभी उसके 'सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण' की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान दिया। वर्तमान समय में अर्थाधारित (Meaning-based) व संप्रेषणपरक (Communicative) भाषा सीखने पर अधिक बल दिया जा रहा है जिसका हवाला बार-बार *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा — 2005* में भी दिया गया है। अतः उपर्युक्त विचारों के चलते हुए शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि वह यह जाने कि एक बच्चे के भाषायी विकास में विशेषत: संप्रेषणपरक भाषायी कौशल विकसित होने की प्रक्रिया में उसके सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण तथा साथ ही उसकी रुचि, अभिवृत्ति, व योग्यता आदि (समग्रत: मनो-सामाजिक दृष्टिकोण) की समानांतर रूप से क्या भूमिका है।

शोध प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध कथन के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने सरकारी विद्यालय के कक्षा 4 व कक्षा 5 (5+5) के कुल 10 बच्चों द्वारा हिंदी भाषा में संप्रेषणपरक भाषायी गतिविधियाँ संपन्न करवाईं। जिनमें स्वतंत्र लेखन, चित्र-वर्णन, संवाद निर्माण तथा दिए गए शब्दों द्वारा कहानी अथवा कविता निर्माण आदि गतिविधियाँ शामिल की गयी थीं। तत्पश्चात् शोधार्थी ने बच्चों द्वारा संपन्न की गई गतिविधियों का अध्ययन किया।

संप्रेषणपरक भाषायी गतिविधियाँ

संप्रेषणपरक भाषायी क्षमता की संकल्पना 1971 में डेल हाय्म्स (Del Hymes) ने प्रस्तुत की (सिंह, 2007)। संप्रेषणपरक भाषायी गतिविधियाँ मुख्यतः कार्य-आधारित गतिविधियाँ (task-based activities) होती हैं, जिसमें बच्चों को भाषा सीखने के सहज व प्राकृतिक अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों में, बच्चों को उनके सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा प्रयोग करने का मौका प्राप्त होता है। इन गतिविधियों द्वारा बच्चा भाषा को अपने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर सीखता है। यह गतिविधियाँ बच्चे के व्यावहारिक भाषायी क्षमता के विकास में अत्यंत लाभदायक होती हैं तथा साथ ही करके सीखने की पद्धति (learning by doing) पर आधारित होती हैं। अत: ये गतिविधियाँ बच्चों में प्रयोजनमूलक व व्यावहारिक भाषायी क्षमता का विकास करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं।

संप्रेषणपरक गतिविधियों की मुख्य विशेषताएँ

- ये गतिविधियाँ विशेषत: छात्र केंद्रित शिक्षण-सिद्धांतों पर आधारित होती हैं।
- ये मुख्यत: अर्थआधारित होती हैं।
- वास्तविक जीवन से संबंधित होती हैं।
- भाषायी कौशलों को एकीकृत रूप में सीखने में सहायक होती हैं।
- ये गतिविधियाँ बच्चों को बौद्धिक प्रक्रिया (जैसे — वर्गीकरण करना, तर्क करना, चयन करना, सूचना का मूल्यांकन कर प्रयोग करना, क्रमबद्ध करना आदि) में संलग्न करती हैं।
- संदर्भगत भाषा सीखने के सिद्धांत पर बल दिया जाता है।
- बच्चा प्रयोजनमूलक भाषा सीखने की दिशा में अग्रसर होता है।

- ये गतिविधियाँ व्याकरण के नियमों को व्यवहारिक रूप में प्रयोग करने के अवसर उपलब्ध करवाती हैं।
- बच्चा स्वयं के अंत: वाक् (inner speech) का प्रयोग कर भाषा सीखता है।

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त की गयीं संप्रेषणपरक गतिविधियाँ

- अपने जीवन की किसी यादगार घटना का वर्णन करो।
- मेरा सपना (संवाद निर्माण)

  माँ – बेटी, अच्छा तुम बताओ कि बड़े होकर तुम क्या बनना चाहती हो?

  बेटी – मैं तो.....बनना चाहती हूँ।

  माँ – .....

  बेटी – .....

  संवाद पूरा करो।
- दिए गए चित्र का अपने शब्दों में वर्णन करो।
- निम्नलिखित शब्दों से किसी कहानी अथवा कविता का निर्माण करें — मेहनत, कोशिश, बाज़ार, पकवान, भोजन, दु:ख, खाना, पेड़-पौधे, परिवार, भूख, परेशानी, आवाज़, खुशी, चिड़िया, उड़ना, मनपसंद, लोग, मम्मी, पापा, दादा, दादी, दुश्मन, मदद, दोस्त, खीर, गुस्सा, दुनिया, एकता, इकट्ठा और प्यार।
- दी गयी परिस्थितियों के अनुसार अभिनय करो — जैसे दुकान से कोई सामान लेने के लिए दुकानदार व खरीददार के बीच बातचीत का अभिनय आदि।

छात्रों द्वारा संपन्न संप्रेषणपरक गतिविधियों का विश्लेषण

संप्रेषणपरक गतिविधियों के कार्यान्वयन के दौरान विद्यार्थियों का मुख्य फ़ोकस विषय-वस्तु पर रहता है। इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं कि छात्र लेखन के दौरान भाषा के व्याकरणिक तत्वों का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखेगा, बल्कि इसका अर्थ यह है कि जब लेखन कार्य संपन्न हो रहा होगा, तब विद्यार्थी भाषायी विषय-वस्तु/संरचना (language content or structure) के निर्माण हेतु व्याकरणिक नियमों का ध्यान रखते हुए, अपेक्षित विषय-वस्तु (content) के लेखन पर अधिक बल देगा। इस प्रकार की गतिविधियों में बच्चों ने गतिविधि के दौरान क्या कार्य (भाषा व विषयवस्तु संबंधी) किया है, इस पर अधिक ध्यान दिया जाता है बजाय कि उसने क्या कार्य नहीं किया। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में स्वतंत्र लेखन तथा व्यावहारिक भाषा प्रयोग की कुशलता का विकास किया जा सकता है। जब तक किसी भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का मूल्यांकन ना किया जाये तब तक वह प्रक्रिया अधूरी ही रहती है। अत: शोधार्थी ने छात्राओं द्वारा हिंदी भाषा संबंधी संप्रेषणपरक गतिविधियाँ संपन्न करवाने के पश्चात, उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसके लिए उसने कुछ पैमानों (criteria) का निर्धारण किया जो कि इस प्रकार हैं —

- सुसंगत विषयवस्तु (content appropriateness)
- रुचि (interest)
- भाषायी कुशलता (language competence)

- विचार प्रस्तुतीकरण की गहराई (indepth of thought representation)
- सामाजिक मुद्दों पर विचार (social issues)

संप्रेषणपरक गतिविधियों का पैमानेवार विश्लेषण

शोधार्थी द्वारा संप्रेषणपरक गतिविधियों का पैमानेवार वर्णन इस प्रकार है —

- विषयवस्तु उचितता/सुसंगत विषयवस्तु — बच्चों द्वारा संपन्न की गयी संप्रेषणपरक गतिविधियों में विषयवस्तु उचितता की यदि बात की जाए तो अधिकांश बच्चों ने वही विषय वस्तु लिखी है जो कि शोधार्थी द्वारा निर्धारित गतिविधि के दौरान पूछी गयी थी। जैसे – यादगार घटना के वर्णन में बच्चों ने अपने जीवन की किसी यादगार घटना का वर्णन किया है जिसके अंतर्गत बच्चों ने अपने जीवन के सुख व दुःख दोनों ही तरह के एहसासों/भावनाओं का उल्लेख किया है।
- रुचि — बच्चों की रुचि के अनुरूप अगर संप्रेषणपरक गतिविधियों को विश्लेषित किया गया तो शोधार्थी ने पाया कि ज़्यादातर बच्चों ने जो भी लेखन कार्य किया, वह उनके सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों से जुड़ा हुआ था। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

  बच्चों ने अपने घरों में चोरी हो जाने की घटना, घर में आग लग जाने की घटना का तो किसी ने घर-परिवार में लड़ाई की घटना आदि के बारे में बताया है। माँ-बेटी संवाद वाली गतिविधि में ज़्यादातर बच्चों ने अध्यापिका व डॉक्टर बनने की इच्छा ज़ाहिर की, जबकि कुछ-एक बच्चे पुलिस अधिकारी व इंजीनियर भी बनना चाहते हैं। इस गतिविधि के द्वारा शोधार्थी ने यह भी जाना कि बच्चों की आकांक्षा और कल्पना स्तर बहुत उच्च-स्तरीय है और उनकी प्राप्ति में अधिकांशत: उनकी माँ उनके साथ खड़ी नज़र आती हैं। एक बच्ची ने यह भी लिखा कि वह बड़े होकर माँ बनना चाहती है। वहीं किसी बच्चे ने अपने जीवन के हास्य संबंधी अनुभवों का भी वर्णन किया है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि बच्चों ने शोधार्थी द्वारा करवाई गयी 5 संप्रेषणपरक गतिविधियों में विविध तरह की लेखन सामग्री को प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे लेखन प्रक्रिया के दौरान विविध रुचि स्तर के चलते विविध प्रकार की लेखन सामग्री का निर्माण करते हैं।
- भाषायी कुशलता — भाषायी कुशलता के विश्लेषण व मूल्यांकन हेतु शोधार्थी ने बच्चों द्वारा संपन्न गतिविधियों में मुख्यत: उनके द्वारा प्रयुक्त की गयी शब्दावली, वाक्य-संरचना तथा वर्तनी पर विशेष ध्यान दिया है। यदि शब्दावली की बात की जाए तो अधिकांश बच्चों ने लेखन कार्य में हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू तथा साथ ही प्रादेशिक भाषाओं का भी प्रयोग किया है। जैसे — लोन, टेंशन, सोसायटी, शुक्रिया, शिक्षित, निर्णय, बिल्डिंग्स, ऑक्सीजन, गर्व, ड्रेस, घबराय, हॉस्पिटल, सरप्राइज, t.v. face, admission आदि शब्द। इसका अर्थ यह है कि बच्चे की शब्दावली भंडार पर उसके तत्कालीन वातावरण में प्रयुक्त हो रहे शब्दों का अत्यंत प्रभाव पड़ता है।

  वाक्य-संरचना स्तर पर 10 में से लगभग 4 बच्चों ने काफ़ी सटीक व संरचित वाक्यों का निर्माण किया है,

जबकि लगभग 6 बच्चों ने अपेक्षाकृत कमज़ोर व अर्ध-संरचित (not properly formulated) वाक्यों का निर्माण किया है।

वहीं यदि लेखन गतिविधि में वर्तनी शुद्धता की बात की जाए तो शोधार्थी ने देखा की 10 में से लगभग 5 बच्चों की वर्तनी शुद्धता का स्तर 70 से 80 प्रतिशत शुद्ध है, जबकि शेष 5 बच्चों की वर्तनी शुद्धता का स्तर 50 से 65 प्रतिशत तक शुद्ध है। कहीं-कहीं बच्चों ने मुहावरों का भी प्रयोग किया है, जैसे 'पलकों पर बिठाना' आदि, जिसने उनके लेखन कार्य को और भी अधिक प्रभावी बनाने का कार्य किया है।

उपर्युक्त विवरण द्वारा यह कहा जा सकता है कि लगभग सभी बच्चे लेखन क्षमता में निपुणता प्राप्त करने की प्रक्रिया में संलग्न हैं। अंतर केवल इस बात का है कि कोई बच्चा उस प्रक्रिया में थोड़ा आगे है तो कोई थोड़ा पीछे। किंतु भाषा लेखन में उपयुक्त कुशलता/निपुणता प्राप्त करना सभी की आवश्यकता है।

- विचार प्रस्तुतीकरण की गहराई — इस पैमाने के अंतर्गत शोधार्थी ने विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत विचारों की गहराई पर विशेष ध्यान दिया है। इसके विश्लेषण के दौरान शोधार्थी ने देखा कि 10 में से लगभग 6 बच्चों ने विचारों को उचित क्रम में प्रस्तुत किया है, जबकि शेष बच्चों ने अपेक्षाकृत कमतर, उचित क्रम में प्रस्तुत किया है। वहीं यदि विचारों की गहराई को देखा जाए तो अधिकांश बच्चों ने बहुत ही गहरे चिंतन के पश्चात् विचारों का प्रस्तुतीकरण किया है। उनके विचारों को पढ़ने के बाद शोधार्थी ने यह भी देखा कि 9 से 10 साल के बच्चे भी इतने विश्लेषणात्मक ढंग से अपने विचारों को प्रस्तुत कर सकते है।

उदाहरण के लिए कुछ वाक्य प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

"कुछ लोग अपनी माँ का ध्यान नहीं रखते, खाना नहीं देते, उन्हें मारते-पीटते हैं। वहीं कुछ लोग अपनी माँ को पलकों पर बैठा कर रखते हैं और हम भी उन्हीं लोगों में से हैं जो अपने माँ-बाप की परवाह करते हैं।"

"दूसरा चित्र यह दिखा रहा है कि यहाँ पानी की बहुत कमी है, इसीलिए सब झगड़ रहे हैं। इन्हीं झगड़ों में यह भी नज़र आ रहा है कि झगड़े-झगड़े में बहुत सारा पानी भी गिर रहा है।"

"ये कैसा व्यवहार है, बिटिया पकाए और माँ खाए।"

संवाद निर्माण गतिविधि के अंतर्गत कुछ बच्चों ने बहुत ही सटीक व क्रमानुसार अपनी बात को रखा है जो कि इतने छोटे बच्चों की दृष्टि से अत्यंत ही प्रशंसनीय प्रयास है।

- सामाजिक मुद्दों पर विचार — कक्षा 4 व कक्षा 5 के लगभग ज़्यादातर विद्यार्थियों ने अपने लेखन कार्य में समाज व तत्कालीन वातावरण संबंधी कई गंभीर मुद्दों को उठाया है, जिसके लिए कई बच्चों ने अपनी बात को स्वरचित कविता के माध्यम से भी प्रस्तुत किया है, उदाहरण के लिए —

"पेड़ पर कविता"

पेड़ उगाओ, पेड़ उगाओ।
पेड़ से सब कुछ मिलता है।
पेड़ हमारे रखवाले हैं।

पेड़ से हमें सब्जी व फल मिलते हैं।
पेड़ हैं तो बारिश होती।
.....
पेड़ नहीं तो इंसान नहीं।
पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ।

इसी तरह बच्चों ने पानी बचाओ, पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ जैसे मुद्दों पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इसके साथ ही बच्चों ने नैतिक मूल्यों जैसे मेहनत करना, समाज कल्याण व दूसरों की मदद करने की भावना से परिपूर्ण विचारों को भी अपने लेखन में स्थान दिया है, जैसे — 'बस मेहनत से करें तो छोटे काम भी बड़े हो जाते हैं', 'मैंने एक अंधे आदमी की मदद की और मुझे उनकी मदद करने से बहुत खुशी मिली। और सबने मुझे इसके लिए शाबाशी भी दी।' कुछ बच्चों ने परिवार तथा एकता के महत्त्व पर भी बात की जैसे — 'मेहनत, कोशिश सब करेंगे। परिवार हम जोड़कर ही रहेंगे।.....अगर कोई परेशानी हो तो मिलकर साथ निभाएँगे। हम सबकी मदद करेंगे चाहे अँधा हो या लँगड़ा या हो बहरा, सबकी मदद करेंगे।'

उपर्युक्त कथन शोधार्थी को यह भी एहसास कराता है कि बच्चों के मन में शारीरिक रूप से अक्षम अथवा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भी अन्य लोगों की तरह ही एकसमान भाव है व उनके प्रति वे संवेदनशील भी हैं जो कि हमारे विविधता से परिपूर्ण समाज की उन्नति के लिए बहुत ही सकारात्मक सोच है। इसी तरह माँ-बेटी संवाद में बच्चों ने स्वयं की आकांक्षाओं को बहुत ही खुले रूप में प्रस्तुत किया है। एक बच्चे ने तो जेंडर संबंधी रूढ़िवादी मान्यताओं पर भी प्रश्न उठाया है। इस तरह की अभिव्यक्ति को देखकर, भाषा एक सर्वोत्तम अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्वयं को सिद्ध करती है।

शोधार्थी ने बच्चों को कुछ परिस्थितियाँ भी दी थीं जिन पर उन्हें अभिनय करने को कहा गया। जिसमें बच्चों को दुकानदार, खरीददार, शिक्षक व छोटी बहन तथा बड़ी बहन आदि की भूमिका निभाने को कहा गया। इस गतिविधि का बच्चों ने बहुत ही आनंद उठाया। इस गतिविधि के द्वारा बच्चों को संवाद निर्माण करने का अनुभव तो प्राप्त हुआ ही तथा साथ ही वे अन्य लोगों की भूमिका को भी महसूस कर पाए जिसे समानुभूति (empathetic) होना भी कहते हैं।

उपसंहार

उपर्युक्त वर्णित सभी संप्रेषणपरक गतिविधियों को बच्चों द्वारा अत्यंत ही ईमानदारी के साथ निभाया गया है। इन गतिविधियों के विश्लेषण के पश्चात् शोधार्थी सारत: यह कहना चाहती है कि बच्चे जब भी कभी किसी स्वतंत्र लेखन की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं तो वे स्वयं की मन:स्थिति तथा सामाजिक आयामों दोनों से ही प्रभावित होते हैं। लेखन के दौरान यह संभव नहीं कि बच्चा केवल स्वयं के बुद्धिगत तत्वों (रुचि, अभिवृत्ति, योग्यता) पर ही फ़ोकस करते हुए लिखता है और न ही ऐसा होता है कि लेखन प्रक्रिया के दौरान बच्चे केवल अपने सामाजिक संदर्भों से ही जुड़ते हुए लेखन कार्य संपन्न करते हैं। बल्कि स्वंतत्र लेखन के समय बच्चे प्रत्येक क्षण शीर्षक का चुनाव (किस विषय पर लिखना है),

शब्दावली चयन आदि का निर्धारण अपनी रुचि, अभिवृति व योग्यता (मनोगत-कारक) तथा साथ ही उनके स्वयं के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार ही करता है। बच्चों के निजी अनुभव उनके लेखन कार्य की विषय-वस्तु का मुख्य आधार होते हैं। इन गतिविधियों के द्वारा बच्चों की लेखन क्षमता में अपेक्षाकृत सुधार होता है, अत: भाषा की कक्षा में इस प्रकार की गतिविधियों को अवश्य ही स्थान देना चाहिए।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भाषा विकास की प्रक्रिया में बच्चे के मनोवैज्ञानिक कारकों तथा साथ ही उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व वातावरण की समानांतर रूप से अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2007. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क — 2005*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

एलिस, आर. 2003. *टास्क-बेस्ड लैंग्वेज लर्निंग एंड टीचिंग*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

व्योगोत्सकी, एल.एस. 2011. *विचार और भाषा*. ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली.

सिंह, दिलीप. 2011. *भाषा का संसार*. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

——. 2007. *भाषा, साहित्य और संस्कृति-शिक्षण*. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.